Introduction

:: प्राक्कथन ::

डा० धर्मवीर भारती हिन्दी साहित्य की स्वातंत्र्योत्तर नयी पीढ़ी के साहित्यकारों में सर्वतोन्मुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के धनी हैं।

डा० भारती ने अत्याधुनिक प्राय: सभी साहित्यिक विधाओं पर अपनी लेखनी का कमाल दिखाने में बेजोड़ ख्याति एवं सफलता अर्जित की है। उन्होंने सभी विधाओं को आधुनिक युग-बोध के अनुरूप नये आयाम प्रदान करके अपने सफल प्रयासों को सिद्ध किया है। उन्होंने पाश्चात्य देशों की नयी चिन्तन-धाराओं के समवेत प्रभावों से प्रेरणा ग्रहण कर उन्हें भारतीयता के रंग में ऐसे रूपायित किया है जिससे भारतीय जीवन तो अपने बाह्याभ्यन्तर की समस्त रेखाओं के साथ उजागर हो ही जाता है साथ ही साथ समकालीन विश्व-जीवन भी हमारे सामने उभर आता है। आलोच्य साहित्यकार ने भारतीय वाङ्मय एवं संस्कृति के प्रकाशपुंजों को भी आधुनिक संदर्भों में अभिव्यक्ति प्रदान करके युगीन जीवन को, विश्वमानव को एक नया संदेश-मानदण्ड और अपनी नयी व्याख्याओं का उपहार भेंट किया है। जो भारतीय मिथक अद्यावधि घोर अंधकार में थे, उन्हें आधुनिक भाव-बोध की सटीक व सशक्त भाषा में ढालकर जहां एक ओर भाषा-सौष्ठव की अभिवृद्धि की है, वहीं दूसरी ओर स्वर-साम्य के युगपदीय परिपार्श्व में अपनी स्वस्थ युगधर्मिता निरूपक दृष्टि सजगता का भी परिचय दिया है।

शब्दों की आत्मा के पारखी तथा कुशल अभिव्यक्ति के शिल्पी डा० भारती ने अनेक शैल्पिक प्रयोग किये हैं। इस दृष्टि से उनके कथा-साहित्य और नाट्य-साहित्य में किये गये प्रयोग बहुचर्चित रहे हैं। जहां 'अन्धायुग' अतुकान्त काव्य-नाटक की रचना के ढंग का हिन्दी साहित्य में प्रथम बार लिखा गया रंगमंचीय नाट्य-प्रयोग का एक सफल सूत्रपात है, वहीं दूसरी ओर 'सूरज का सातवां घोड़ा' जैसा बहुचर्चित लघु उपन्यास भी पुराने ढंग की कथा-पद्धति से प्रसूत सर्वथा एक नवीन टैकनिक की सम्भावना का उपन्यास है। और इसीलिए यदि वे एक सिद्धहस्त चतुर खिलाड़ी की तरह शिल्प के मैदान में बाजी मार भी लेते हैं, तो इसमें कतई अतिशयोक्ति नहीं।

उनकी कृतियों में दो विपरीत स्तरीय ध्रुव स्पष्टतया परिलक्षित होते हैं - एक है आदर्शवादी रूमानी भाव-बोध का ध्रुव तथा दूसरा है यथार्थवादी आधुनिक भाव-बोध का ध्रुव। किन्तु वैशिष्ट्य यह है कि तथाकथित दोनों ही ध्रुव गंगा-यमुना की भांति उनके रचना-व्यक्तित्व में घुलमिल कर अंतत: सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं। वस्तुत: उक्त दोनों प्रकार की भाव-स्तरीय रचनाओं में मानवतावादी धरातल पर व्यक्ति-स्वातंत्र्य के मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में नयी नैतिकता प्रस्थापित मान्यताओं का स्वर रचनाकार से अपनी सशक्त अभिव्यक्ति पा लेता है।

सम्पादन के क्षेत्र में भी उन्होंने समसामयिक विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के विकास में अपना स्तुत्य योगदान प्रदान किया है।

ऐसे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व के कृतित्व पर अभी तक समग्र रूप से कुछ भी नहीं लिखा गया है। यद्यपि सामयिक पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में फुट-पुट रूप में उनकी रचनाओं के सम्बंध में कुछ चर्चाएं की गई हैं, लेकिन आवश्यकता इस बात की थी कि जिस साहित्यकार ने साहित्य की प्राय: सभी विधाओं को नया मोड़ दिया है उसका और उसकी रचनाओं का स्वतंत्ररूप से समग्रतया मूल्यांकन किया जाय। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में डा० धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बंध में मूल्यांकन करने का लघु प्रयास किया गया है।

कहना न होगा कि स्वातंत्र्योत्तर साहित्य अपने सम सामयिक जन-जीवन की आयातित एवं अप्रत्याशित विसंगतियों तथा विकृतियों से जनित अनेक विध द्वन्द्व-ग्रसित समस्याओं की पर्तों को अनावृत करने की दिशा में मनोवैज्ञानिक निष्कर्षों एवं प्रतिमानों को अपना प्रमुखाधार बनाकर विकसित हुआ है। इस स्तर पर वह अपने रचना- शिल्प में कहीं संश्लिष्ट तो कहीं दुरुह हो गया है। यही कारण है कि स्वातंत्र्योत्तर साहित्यकारों को अपने साहित्यिक कर्म के उपरान्त आवश्यकता प्रतीत होने पर दृष्टि-संकेत के रूप में, अपने कथ्य को पाठकीय संवेदना के अधिकाधिक

निकट पहुंचाने के निमित्त व्यक्तव्य, भूमिका, या निवेदन जैसे माध्यमों का आश्रय भी ग्रहण करना पड़ा है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आज का रचनाकार जहाँ दुहरे दायित्वों को ढोता हुआ चल रहा है वहाँ वह अपने रचना-व्यक्तित्व के स्वातंत्र्य की बलवती मांग को तो बड़े साहस के साथ साहित्य में प्रतिष्ठित करता ही है साथ ही साथ पाठकीय किंवा सामाजिक प्रतिबद्धता से जुड़कर चलना भी यथेष्ट समझता है। डा० भारती भी उक्त तथ्य के अपवाद नहीं है। उन्होंने आज की रचना प्रक्रिया की जटिलता तथा वैविध्य के मर्म को सम्यक् रीति से समझने के लिए इस बात की आवश्यकता पर अधिक बल दिया है कि इस समस्त प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए किसी भी कृति के मूल्यांकन में तीन तत्वों पर विचार करना अनिवार्य है। ये तीनों तत्व अलग नहीं हैं, न इन पर एक दूसरे से पृथक् रूप में विचार हो सकता है। ये तीनों समीक्षा के तीन आयाम(Dimemsioms) हैं और किसी भी एक के बिना शेष दो निरर्थक हैं। एक कला कृति के पहले रूप में एक संचित शास्त्रीय परम्परा, जातीय सौंदर्य-बोध और परम्परागत काव्य-श्रृंखला की विशिष्ट कड़ी होती है। दूसरे रूप में यह एक विशिष्ट समाज व्यवस्था की सांस्कृतिक निधि होती है और उसका एक विशिष्ट मूल्य होता है। तीसरे रूप में वह एक व्यक्ति की एक विशिष्ट क्षण की अनुभूति की शब्दात्मक अभिव्यक्ति होती है और कुछ विशिष्ट तत्वों से समन्वित होकर वह कला-कृति का महत्व प्राप्त करती है। किसी भी कला-कृति या प्रवृति का मूल्यांकन करते समय यदि इनमें से एक भी पक्ष की उपेक्षा की गई तो वह समीक्षा एकांगी बन जाती है।"[1]

इसी आधार पर प्रस्तुत शोध-प्रबंध में डा० धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए साहित्यिक एवं सामाजिकता के फलकों पर मूल्यांकन किया गया है।

1- डा० धर्मवीर भारती, `मानव मूल्य और साहित्य`-प्र.सं० 1960 पृ० 146

हिन्दी साहित्य में डा0 भारती एक बहु प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबंध के द्वारा उनके सर्वांगीण कृतित्व को प्रथम बार समग्र रूप में देखा गया है जिसे अपने आप में एक योगदान कहा जा सकता है।

यहां यह तथ्य भी ध्यातव्य है कि प्रत्येक शोधार्थी की अपनी सीमाएं होती हैं। वह विभिन्न सीमाओं और मर्यादाओं से जकड़ा रहता है।

अध्ययनगत सुविधा को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध-प्रबंध को 10 अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय डॉ0 धर्मवीर भारती की जीवनी एवं व्यक्तित्व से सम्बंधित है। इसके अन्तर्गत वैचारिक तथा रचनात्मक धरातल पर उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की रेखाओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है, साथ ही प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर उनके जीवन एवं व्यक्तित्व के बिखरे जीवंत सूत्रों को सम्पुंजित करने का यथाशक्य प्रयत्न भी किया गया है। इस सम्बंध में उनके घनिष्ठ मित्र डा0 जगदीश गुप्त, श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा, श्री उमाकांत मालवीय, उनकी भूतपूर्व पत्नी श्रीमती कान्ता भारती, उनके शुभेच्छुक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन तथा उनके अनेक पाठकों से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत सम्पर्क किये गये हैं। शोधार्थी व्यापक रूप से इलाहाबाद जहां कि भारती की रचना-प्रक्रिया के संदर्भ-सूत्र एवं उनके जीवन के बहुमूल्य सृजनात्मक क्षण घरेलू सम्पत्ति की भांति आरक्षित रहे हैं दृष्टिगत किये गये हैं। इससे उसे आशातीत प्रेरणा एवं सम्यक् दृष्टि मिल सकी है।

द्वितीय अध्याय में के अन्तर्गत डा0 भारती के समय की राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक एवं धार्मिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के आलोक में प्रस्तुत अनुशीलन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है। भारती के साहित्यकार का प्रादुर्भाव स्वातंत्र्योत्तर युग के नये और पुराने मूल्यों की संधि-बेला में हुआ है। प्रस्तुत अध्याय में इसी संकटापन्न परिवेश को भारती की साहित्यिक चेतना के उन्मेष एवं उनके विकास का काल कहा गया है।

तृतीय अध्याय समकालीन साहित्यिक विकास से सम्बंधित है। इसमें सर्व-प्रथम समसामयिकता एवं आधुनिकता से गृहीत तात्पर्य पर अंगुलि-निर्देश करने के पश्चात् समकालीन गद्य-पद्य चेतना की विकासात्मक पृष्ठभूमि में तत्सम्बंधित कथ्य और शिल्पगत नवीन आयामों का विहंगावलोकन प्रस्तुत करते हुए कतिपय निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न किया गया है। साथ हीसाथ इस बात पर भी दृष्टि-संकेत किया गया है कि विभिन्न कथ्य एवं शिल्पगत वैकासिक मोड़ों के संदर्भ में आलोच्य साहित्यकार ने न केवल अपनी सृजनात्मक लेखन-प्रतिभा का परिचय दिया है वरन् समवर्ती विभिन्न साहित्यिक आन्दोलनों और प्रवृत्तियों की दिशा में नवीन सम्भावनाओं को भी प्रश्रय दिया है। इसका सोदाहरण अध्ययन तद्सम्बंधित पीछे के अध्यायों में किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में डा० भारती प्रणीत काव्य कृतियों के वर्गीकरण का प्रयास करते हुए आलोच्य कृतियों का प्रवृत्तिमूलक विवेचन किया गया है। साथ ही इस तथ्य पर भी विचार किया गया है कि आधुनिक भाव-बोध के अनुरूप किस प्रकार पूर्ववर्ती काव्य-धारा से पृथक् नवीन रूप से भाव-योजना तथा रस-दर्शन के क्षेत्र में आलोच्य कृतिकार को अभूतपूर्व सफलता मिली है। इसमें यह भी बताया गया है कि किस प्रकार रूमानी भावुकता की गुलाब-बिछी मार्दव भूमि से संक्रमित होता हुआ कृतिकार अन्ततोगत्वा जीवन-यथार्थ के वास्तविक धरातल पर आकर अपने विवेकपूर्ण दायित्व के सूत्रों को सम्भाल लेता है।

पंचम अध्याय में डा० भारती के काव्य का शिल्प-पद्धीय अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें स्वातंत्र्योत्तर काव्यान्दोलनों द्वारा स्वतंत्रतया उभरनेवाले विभिन्न काव्य-शिल्पीय उपादानों में विशेषकर भाषा, शब्द-शक्ति, अलंकार-विधान, बिम्ब और प्रतीक योजना तथा छंदीय छटा का विशद और विस्तृत अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय में यथास्थान डॉ० भारती के काव्यादर्श पर भी प्रकाश डाला गया है। अंतत: शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि

डॉ0 भारती का काव्य-शिल्प अत्यंत सशक्त एवं समृद्ध है। उन्होंने परम्परित काव्य-शिल्पीय चेतना के साथ ही नवीन शिल्प-दृष्टि से भी काव्य को नई भंगिमा प्रदान की है।

षष्ठम एवं सप्तम अध्याय डा0 भारती रचित कथा-साहित्य तथा नाट्य-साहित्य से सम्बंधित हैं। षष्ठम अध्याय के प्रारंभ में डा0 भारती के गद्यकार के रूप को समझने का प्रयास किया गया है। अभी तक उनके गद्यकार पर प्रकाश नहीं डाला गया है। यहां इस अभाव की पूर्ति का यथासंभव प्रयास किया गया है। इसके उपरान्त वस्तु उद्देश्य एवं शिल्पगत नवीन आयामों के परिप्रेक्ष्य में आलोच्य साहित्यकार के उपन्यास एवं कहानी-साहित्य का सम्यक् मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय में वस्तु-चेतना के आधार पर प्रतिनिधि कहानियों का वर्गीकरण भी किया गया है।

सप्तम अध्याय में नाट्य-कला की दृष्टि से काव्य-नाटक 'अंधायुग' तथा एकांकी संग्रह 'नदी प्यासी थी' में संकलित पांच एकांकियों का विस्तृत विवेचन किया गया है। डा0 भारती अपने कवि और कथाकार के रूप की भांति ही एक सफल नाटककार भी हैं। उनके नाटकों में आधुनिक भाव-बोध की तीखी भंगिमाओं के साथ हीकाव्यात्मक मर्मस्पर्शिता के मादक तत्वों का भी विनियोग हुआ है। साथ ही एक समर्थ प्रयोगकर्ता के रूप में उन्होंने अपने नाटकों में प्रयुक्त अभिनव प्रयोगों के द्वारा रंगमंचीय संभावनाओं को सफलता के सोपानों तक पहुंचाया है। अनेक पुष्ट तथ्यों के आधार पर शोधार्थी ने तथाकथित बात को सिद्ध करने का प्रयास किया है। उनका एकांकी साहित्य अद्यावधि अस्पर्शित ही पाया गया है, यहां उसका किया गया सुव्यवस्थित अध्ययन इसी अभाव की पूर्ति है।

अष्टम अध्याय में डा0 भारती के कथा और नाट्य-साहित्य में प्रतिबिंबित भारतीय जीवन के विभिन्न परिपाश्वों का तथ्यान्वेषण किया गया है। डा0 भारती के गद्य-साहित्य को भारतीय जीवन के परिवेश में देखने परखने का प्रस्तुत दृष्टिकोण अपने आप में एक परिश्रम साध्य प्रयास है। इस अध्याय से उनके कथा एवं नाट्य-साहित्य

में आलोकित भारतीय जीवन का एक संपूर्ण और विराट चित्र तो उभर कर आता ही है साथ -साथ ही इससे डा0 भारती की जीवन-दृष्टि एवं उनकी मानवतावादी विचारधारा का भी पूरा परिचय मिल जाता है।

नवम अध्याय डा0 भारती के निबंध, समीक्षा एवं अनूदित साहित्य के कथ्य एवं शिल्प सम्बंधित अनुशीलन पर आधारित है। प्रस्तुत अध्याय में निबंधकार, समीक्षक तथा अनुवादक के रूप में डा0 भारती के महत्वपूर्ण प्रदेय पर विचार-विमर्श प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत अध्याय को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में निबंधकार डा0 भारती के निबंधों का वर्गीकरण करते हुए उनका शैली-तात्त्विक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। द्वितीय भाग में समीक्षात्मक प्रतिपाद्य कृतियों का मूल्य-महत्त्व निरूपित करते हुए उनकी प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय भाग के अन्तर्गत अनूदित कृतियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए अनुवाद-कला के आधार पर अनूदित रचना-कृतियों की गुण-वत्ता एवं भाषा-सौष्ठव का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

दसवाँ अध्याय उपसंहार का है। इसके अन्तर्गत डा0 भारती के समग्र साहित्य के आलोक में अध्ययनकृत साहित्य के प्रदेय को मूल्य और महत्व, सीमा और सम्भावना की दृष्टि से निष्कर्षित किया गया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की प्रेरणा मुझे अपने विभागाध्यक्ष पूज्य गुरुदेव डा0 मदनगोपाल गुप्त जी एवं अपने निर्देशक पूज्य गुरुदेव डा0 प्रतापनारायण झा जी से मिली। इसके पूर्व डा0 भारती के साहित्य का एक शब्द भी मेरे लिये शब्दब्रह्म की भांति अस्पर्शित एवं अदर्शित ही बना रहा था। आत्म तुल्य गुरुद्वय का सहज आशीर्वाद एवं प्रत्येक कठिनाइयों में नित्य प्राप्त आत्मीयतापूर्ण सहायता ही मेरे लिए पाथेय बनी। उनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन एवं अमूल्य परामर्शों से ही इस वैतरिणी को पार करसका। उनके घर सदैव मुझे जो स्नेह, शिष्टाचार एवं सद्प्रवृत्ति-ला

मिलता रहा है, उससे मैं अपने निर्माण हेतु जो कुछ आत्मसात् कर सका हूं, वह उन्हीं की कृपा का फल है। एतदर्थ उनके ऋण से मुक्त होना मुझ जैसे अकिंचन शिष्य के लिए असंभव ही है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, शोध-ग्रंथों, आलोचनात्मक ग्रंथों, अंग्रेजी पुस्तकों तथा निबंधों का सदुपयोग किया गया है। अतः उनके मनीषी लेखकों के प्रति मैं अपना आभार ज्ञापित करता हूं।

डा० शम्भूनाथ चतुर्वेदी, डा० शिवकुमार मिश्र, प्रो० राममूर्ति त्रिपाठी, डा० प्रेमनारायण शुक्ल, डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल, डा० सी एल प्रभात, डा० अम्बाशंकर नागर, एवं डा० रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' आदि सभी मूर्धन्य विद्वानों का मैं कृतज्ञ हूं कि जिन्होंने हिन्दी विभाग में समय विशेष पर होनेवाली विभिन्न गोष्ठियों के उपरान्त प्रोत्साहन एवं परामर्श देकर मुझे लाभान्वित किया।

डा० जगदीश गुप्त, रीडर प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सौभाग्यवती गुप्त का अत्यधिक आभार मानता हूं। डा० गुप्त जी ने मुझे 'परिमल-स्मारिका' अंक, डा० भारती का एक महत्वपूर्ण पत्र तथा उनकी जन्म-पत्रिका देकर कृतार्थ किया। उनके स्नेह एवं अमूल्य योगदान से ही मैं डा० भारती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के रचना-संदर्भों की पृष्ठभूमि को भलीभांति जान पाया। उनके परिवार के स्नेह एवं सद्व्यवहार से मैं विशेष प्रभावित हुआ। श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा के प्रति भी आभार-भरित हृदय से श्रद्धावनत हूं कि जिन्होंने मुझे डा० भारती के जीवन और उनके कथा-साहित्य के पात्रों को समझने की दिशा में अपने मूल्यवान सुझाव दिये। अपने परम स्नेही मित्र नरेन्द्र घायल, प्रतिनिधि भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली का हार्दिक आभार मानता हूं कि जिन्होंने संदर्भित पत्रिकाएं प्रदान कर न केवल कृतार्थ किया अपितु अपने पूर्ण सहयोग से श्रीमती कान्ता भारती से साक्षात्कार भी कराया। क्या की देवी परम श्रद्धेया श्रीमती कान्ता भारती का इस संदर्भ में विशेष आभारी हूं जिन्होंने विगत रात्रि की इलाहाबाद अनुसंधान-यात्रा की बेहद थकान के होते हुए भी प्रथम रश्मि-बेला में बिना हिचकिचाहट के मेरे निवेदन को स्वीकार कर व्यक्तित्व हेतु निर्मित प्रश्नावली के उत्तर अपने अमूल्य समय में से समय निकाल कर दिये।

तद्वत डा0 धर्मवीर भारती का आभार किन शब्दों में व्यक्त करूं, जिन्होंने जब भी मेरा प्रश्नाकुल भरा पत्र पाया है या जब भी कभी मिला, अनेक विध व्यस्तता के होने के बावजूद भी अर्जुन के उद्बोधनार्थ महाभारत के कृष्ण की भांति सहृदयतापूर्वक कुछ अमूल्यतम क्षण निकालकर अपने अहेतुकी उत्तरों से मेरे योग क्षेम को अपने आप वहन किया है। इस संदर्भ में स्वातंत्र्योत्तर कथा-लेखिकाओं में प्रतिष्ठित श्रीमती पुष्पा भारती का भी उतना ही आभारी हूं, यदि उनका सद्भावनापूर्ण सहयोग न मिलता तो मेरी जिज्ञासाएं अनुत्तरित ही रहतीं।

जब मुझे दिनांक 30-5-77 को उनसे साक्षात्कार के लिये सौभाग्य प्राप्त हुआ, पूरे दो घण्टे मेरी उलझी हुई जिज्ञासाओं का सटीक समाधान प्रस्तुत करते हुए डा0 भारती जी के व्यक्तित्व को समझने के लिए सम्यक् दृष्टि दी।

श्री के0 के0 पाठक, हिन्दी आशुलिपिक(धर्मयुग-बम्बई कार्यालय) के प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूं कि जिनकी सहायता से मैं 'धर्मयुग' की पुरानी फाइलों को देख सका।

श्री जगदीश गोड़िया तथा श्री कृष्णकुमार परदेशी (कहार) के प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूं। जिन्होंने मेरी बम्बई 'अनुसंधान यात्रा' में पूरा सहयोग दिया।

बम्बई विश्वविद्यालय-लायब्रेरी, साहित्य अकादमी-दिल्ली, दिल्ली पब्लिक लायब्रेरी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन-संग्रहालय-प्रयाग, तथा श्रीमती हंसा मेहता लायब्रेरी म0 स0 विश्वविद्यालय-बड़ौदा के प्रति भी अपना आभार प्रदर्शित करता हूं कि जिनसे अपने अध्ययनार्थ कीमती पुस्तकों से सहायता ले सका।

आभारी हूं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उदारतापूर्ण अनुदानी वरदहस्तों का यदि उक्त आर्थिक सहायता मेरे नसीब न हुई होती तो संभवतया पी-एच0डी0 न करते हुए अभी तक बेकारी की कविता ही करता रहता।

डा0 सुरेश जोशी, रीडर गुजराती विभाग, डा0 सुरेश जी. कांटावाला, रीडर संस्कृत विभाग, प्रो0 बिरजे पाटिल, अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग तथा अपने विभागीय गुरुजनों के स्नेह को कैसे भूल सकता हूं जिनसे पग- पग पर मुझे सहयोग एवं दृष्टि मिलती रही । विद्याभास्कर श्री मणिशंकर उपाध्याय, प्रो0 डी0 एम0 डींगरा तथा श्री वैद्यनाथ शास्त्री का भी विशेष आभारी हूं जिनसे मुझे समय विशेष पर सद्चिंतन लाभ होता रहा । अन्तश्च परम पूज्यपाद राजगुरु श्रीमद् महादेवप्रसाद पण्डित जी महाराज (पिता जी) से [illegible] मुझ अल्प को जो सदैव स्नेह, प्रोत्साहन एवं शुभाशीर्वाद प्राप्त होता रहा है, उसी दृष्टि -प्रसाद की साध के साथ -

निवेदक,

भगवानदास कहार

1 जुलाई, गुरुपूर्णिमा 1977

भगवानदास एन0 कहार,

--